ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

संथाल समाज में बारह मास में तेरह त्योहार

Santals Celebrate Thirteen Festival in Twelve Months

Paper Id.:15573, Submission Date: 10/01/2022, Acceptance Date: 20/01/2022, Publication Date: 22/01/2022

बुद्धदेव बिस्वास
अनुसंधान विद्वान,
संताली और ग्रामीण प्रबंधन
विश्व-भारती,
शांति निकेतन
पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

" बंगाली" का अर्थ है बारह महीनों में तेरह त्यौहार। इसी प्रकार, आदिवासी समुदाय के संथाल समाज में बारह मास में तेरह पर्व मनाए जाते हैं। यद्यपि संथाल समाज में विभिन्न प्रकार के त्यौहार हैं, वे धर्म और परिवार पर आधारित हैं। संथाल लोग प्रत्येक त्योहार का आनंद लेते हैं। आजकल, आधुनिक सार्वजनिक जीवन में संथाल त्योहार बहुत बदल गए हैं। संथाल समुदाय कृषि उत्पादन प्रणाली और संस्कृति के धारक के रूप में पहचाने जाने वाले भारतीय उप-महाद्वीप के पहले स्वदेशी लोगों में से एक है। संथालों के प्रमुख देवता सूर्य हैं , जिनको ये लोग -"**सिंह बोंगा** " नाम से बोलते हैं। वे अपने सभी देवताओं को **"बोंगा"** कहते हैं। वे प्राकृतिक तत्वों- पेड, पत्थर को देवता मानते हैं। संथाल समुदाय मूर्ति पूजा का उपयोग नहीं करता है, क्योंकि वे विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं को देवता मानते हैं।

"Bengali" means thirteen festivals in twelve months. Similarly, thirteen festivals are celebrated in twelve months in the Santhal community of the tribal community. Although there are different types of festivals in the Santhal society, they are based on religion and family. Santhal people enjoy each and every festival. Nowadays, Santhal festivals have changed a lot in modern public life. The Santhal community is one of the first indigenous people of the Indian sub-continent to be recognized as the holder of an agricultural production system and culture. The main Gods of the Santhals is Surya, whom these people call by the name **"Singh Banga"**. They call all their Gods as **"Bonga"**. They consider natural elements - trees, stones as gods. The Santhal community does not use idol worship, as they consider various natural objects to be gods

मुख्य शब्द: आदिवासी, संताल, संस्कृति, बहा, दनसाई, सोहोरई
Keywords: Tribal, Santals, Culture, Baha, Dansai, Sohorai

प्रस्तावना

संथाल समुदाय बहुत उत्सव प्रिय है । बंगालियों की तरह, इनमे भी बारह महीनों में तेरह त्योहार देखे जाते हैं, लेकिन बंगालियों की तरह, बैशाख के महीने में वर्ष शुरू नही होता है। वर्ष की शुरुआत माघ माह और अंत पौष माह से होती है। माघ महीने से शुरू होकर संथाल लोग साल भर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समारोहों में शामिल होते हैं। संथाल समाज मे **"आखरा"** शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसमे ये लोग अनेक तरह से नृत्य करते हैं और गाते हैं। महिलाएं प्राकृतिक तत्व पहनती हैं जैसे कि आभूषण के रूप में। वे खुद को सजाते हैं। संथाल समाज में लोक परंपरा का प्रभाव ज्यादा है इसलिए काव्य, गान, इत्यादी का प्रचलन है।संथाल लोगों की एक विशेषता यह है कि कृत्रिम उपकरणों का उपयोग किए बिना, **"तुमदा- टामाक"** अर्थात धामसा मदल का उपयोग करने के अधिक आदी हैं।यद्यपि वर्तमान में कृत्रिम संगीत वाद्ययंत्रों की प्रधानता देखी जाती है।

यानी माघ महीने के पहले दिन त्योहार शुरू होता है जिसे बंगाली नव वर्ष कहते हैं। माघ महीने की पूर्णिमा के दिन तक ये उत्सव किया जाता है। इस समय पर मुर्गी खाई जाती है, इसीलिए इस उत्सव को **"माघ सीम"** कहते हैं।सीम का अर्थ है मुर्गी। ये पूजा न होने तक कोई भी शिकार करना, पत्ते तोड़ना, जंगल मे जाना मना होता है। कोई भी शुभ काम नही किया जाता है। समाज के पुजारी को नायके कहा जाता है। जो संपूर्ण पूजा का दाईत्व लेता है।ये पूजा अधिकतम खेत मे की जाती है। जंगल, पहाड़, गाय, नदी, गाँव की सीमा, इत्यादि के नाम पे पूजा की जाती है।

इस पूजा में यह खिचड़ी बनाई जाती है। यह खिचड़ी गांव के सभी लोगों द्वारा बांटी जाती है ताकि वे पकी हुई खिचड़ी को एक साथ यह सोचकर खा सकें कि उनमें एकता बनी रह सकती है।

माघ मास के बाद फाल्गुन मास की संथाल जाति में **"बाहा"** पूजा की जाती है। यह पूजा पूर्णिमा के दिन की जाती है। संथाल समाज में इस पूजा का बहुत महत्व है। ऐसा कहा जाता है कि पूजा के अंत तक संथाल लड़कियों को अपने सिर पर कोई फूल लगाने की अनुमति नहीं है। इस पूजा को **"बाहा बांगा"** कहा जाता है। बाहा यानी फूल, अर्थात् फाल्गुन के महीने मे आसपास नए फूल खिलते हैं। इसलिए पूजा का नाम बाहा है। इस पूजा तक बालों में फूलों का प्रयोग नहीं किया जा सकता, महुआ का रस नहीं पिया जा सकता, नई सब्जियां नहीं खाई जा सकतीं। जैसा कि बंगाली समाज में कहा जाता है कि सरस्वती पूजा तक कोई बेर या फल खाना मना है। यह पूजा तीन दिनों तक चलती है। संथाल समाज में कोई मंदिर नहीं है।उनके पूजा स्थल को **"जाहेर थान"** कहते हैं। डाल और पत्तों से बना है ये **"जाहेर थान"**। जहां संथाल समाज में विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं की

पूजा की जाती है, जैसे- **"जाहेर एरा", मरांगबुरु, "गोसाई", "मोर का तुरुया को"** आदि। यह **"जाहेर थान"**पूर्व-पश्चिम दिशा में बनाया जाता है। इस काल मे संथाल **"तुमदा- टामाक"**यानी धमसा मादल के साथ नाचते-गाते हैं। इस पूजा के अंत में गांव के लड़के जंगल में जाते हैं, और जानवर का शिकार करते हैं, और उसे लाते हैं, और उस जानवर के मांस के साथ खिचड़ी पकाने के बाद सभी उसे खाते हैं।

फाल्गुन मास के बाद बैशाख मास आता है, इस मास में **"मा:मोरे"** पूजा की जाती है।पूजा का प्रकार पहले वर्णित **"बाहा बांगा"**के अनुसार है।**"मोरे"** का मतलब 5, यह पूजा पांच वर्षों बाद-बाद की जाती है, इसलिए इस पूजा का नाम **"मा:मोरे"**। अन्य पूजाओं की तरह इस पूजा को भी **"तुमदा-टामाक"** अर्थात् धामसा मादल पर बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। संथाल समाज में शराब का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, इसे संथाली भाषा में **"हांडि"** कहा जाता है। जिसका उपयोग वे अपनी पूजा में करते हैं। पूजा इस**"हांडि"** के बिना पूरी नहीं होती है।

फिर आषाढ़ मास में **"एर:सीम"** की जाती है। यह पूजा इसलिए की जाती है ताकि कोई भी बीमारी बाहर से गांव में प्रवेश न करे। यह पूजा अन्य पूजाओं की तुलना में बहुत छोटी होती है।

आषाढ़ मास के बाद श्रावण मास में संथाल जाती की **"हरीयार सीम"** पूजा करते हैं। यह पूजा पहले वर्णित "माघसीम" पूजा के समान है। इस पूजा के पूरा होने तक बकरियों या गायों के लिए घास काटने की अनुमति नहीं है। पूजा संपन्न होने के बाद पालतु जानवरों के लिए घास काटी जा सकती है।

अश्विन के महीने में बंगालियों का सबसे बड़ा त्योहार है दुर्गा पूजा। संथाल समुदाय के लिए भी यह महीना एक महत्वपूर्ण **"दांशाय़ त्योहार"** है। बंगाली साहित्य की पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी ठकुरन हिमालय से भूमी पर अवतरित होती हैं। इस समय देवी दुर्गा की पूजा की जाती है।

इस समय़ संथाल लड़के "**दांशाय़ दांरान"** के लिए जाते हैं। इसका कारण यह है कि भारतीयशत्रु अतीत में अपना राज्य स्थापित नहीं कर सके। संथालों के साथ अपना राज्य स्थापित करने के लिए युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में संथाल के लड़के-लड़कियां सभी शामिल थे। लड़कियों में दो बहादुर लड़कियों **"आयोनाम और काजल"** थीं। दुश्मनों ने सोचा कि इन दो बहादुर लड़कियों का अपहरण किए बिना उनके लिए युद्ध जीतना असंभव होगा, इसलिए उन्होंने इन दोनों लड़कियों का अपहरण कर लिया। संथाल लोग इन दोनों लड़कियों को खोजने निकल पड़े। इस समय लड़के लड़कियों का रूप धारण कर लेते हैं, और घर-घर जाते हैं। चलते-चलते वे अपना नृत्य गाते हैं और उनके पास धनुष-बाण छिपे होते हैं। बंधी अपने अपहृत **"आयोनाम और काजल"** को देखेंगे तो धनुष-बाण से युद्ध करके उन्हें वापस ले आएंगे। उनके गीत की शुरुआत में **"हाय-हाय"** शब्द होता है क्योंकि यह एक दुखद गीत है। इसलिए वे गीत की शुरुआत**"हाय-हाय"** हैं। जैसा-

"हायरे हायरे हायरे हायरे.....
देलांग देलांग गुरू हो ..... देलांग बेरेत में
देलांग देलांग चेला हो..... देलांग साजो: मे
दिशोम दांरान गुरू को ओडोक एना हो.....
दिशोमसांघार चेला को बाहेर एना हो....."।

इस त्यौहार में उनके गुरु-शिष्य हैं, उनकी बातों को इस गीत के माध्यम से उजागर किया गया है। इस समय लड़के सफेद धोती, सिर पर पगड़ी और मोर पंख पहनते हैं। पैरों पर झुमुरा और हाथों पर कांस्य और करताल रखते हैं। संथल साहित्य के अनुसार बारह गुरु होते हैं।

आश्विन मास के बाद कार्तिक मास में संथालों का सबसे बड़ा पर्व **"सोहराय"** मनाया जाता है, यद्यपि क्षेत्र समय क्षेत्र के साथ बदलता रहता है। कहीं यह कार्तिक मास में होता है तो कहीं पौष मास के अंत में। यह त्योहार पांच दिन और पांच रातों तक चलता है। लंबे समय तक चलने के कारण, त्योहार को **"हाथी लेकन सहराय"** कहा जाता है। हाथी ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि य़े लम्बे समय तक होता है। इस कड़ी का उद्देश्य मवेशियों को प्राथमिकता देना है। निर्धारित दिन पर, सभी ग्रामीण अपनी गायों को निर्धारित स्थान पर ले जाते हैं और निर्धारित तरीके से सेवा पूजा करते हैं।इस समय घर की बहू-बेटा अपने घर लौट आती है। इस समय सभी लड़के-लड़कियां पांच दिन और पांच रातों तक गली में नाच-गाते हैं। इन पांचों दिनों का एक विशेष नाम है। जैसे पहला दिन- **"उमास माहा",** दूसरे दिन- **"सारदी माहा",** तीसरा दिन- **"खुंटओ माहा",** चौथा दिनऔर पाँचवाँ दिन- **"जाले"** आर **"जाजेले"**। बंगालियों के लिए इस त्योहार को**"बादना"** के नाम से भी जाना जाता है।

संताल समाज मे बंगालियों की तरह, साल भर अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।अलग-अलग कार्यक्रमों के लिए अलग-अलग रीति-रिवाज हैं। अलग-अलग पूजा के लिए अलग-अलग मंत्र, गीतों का वर्णन किया गया है। अलग-अलग देवता के लिए अलग-अलग का उपयोग किया जाता है। यह मंत्र "बाखेर" कहते हैं।हालांकि मौजूदा बदलते हालात में उनके समाज का रूप बदलता जा रहा है। कई लोग अपने जैसे छोटे-छोटे त्योहार मनाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. संताल संस्कृति को जानने के लिए।
2. संताल समाज में पूजा के तत्वों को जानना।

3. यह जानने के लिए कि ये संस्कृतियां क्यों महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

संथाल समुदाय बहुत उत्सव प्रिय है । बंगालियों की तरह, इनमे भी बारह महीनों में तेरह त्योहार देखे जाते हैं, लेकिन बंगालियों की तरह, बैशाख के महीने में वर्ष शुरू नही होता है। वर्ष की शुरुआत माघ माह और अंत पौष माह से होती है। माघ महीने से शुरू होकर संथाल लोग साल भर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समारोहों में शामिल होते हैं। संथाल समाज मे **"आखरा"** शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसमे ये लोग अनेक तरह से नृत्य करते हैं और गाते हैं। महिलाएं प्राकृतिक तत्व पहनती हैं जैसे कि आभूषण के रूप में। वे खुद को सजाते हैं। संथाल समाज में लोक परंपरा का प्रभाव ज्यादा है इसलिए काव्य, गान, इत्यादी का प्रचलन है।संथाल लोगों की एक विशेषता यह है कि कृत्रिम उपकरणों का उपयोग किए बिना, **"तुमदा- टामाक"** अर्थात धामसा मदल का उपयोग करने के अधिक आदी हैं।यद्यपि वर्तमान में कृत्रिम संगीत वाद्ययंत्रों की प्रधानता देखी जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Murmu, Rameswar. (2012), JaherBongaSantarhKa; Adim Publication, Kolkata*
2. *Hembram , Parimal (2015), Santali Sahitya Itihas, Nirmal Book Agency, Kolkata*
3. *Hansda, Rupchand (2008), More Sin More Nida, Kherwar Publication, Howrah.*
4. *Hansda, Rupchand (2006), Hihiri Pipiri, Kherwar Publication, Howrah.*
5. *Murmur, Lakhan Chandra, (2014), History of Santali Literature, pashchima Publications, Odisha.*
6. *Kerkatta, Sudhil, (2016), Primitive Tribes of Jharkhand, Ke Ke Publication, Allahabad*